• कविताएं...

आ गया जाड़ा



खोलकर खिड़की किवाड़ा
आ गया जाड़ा!
दांत पढ़ते हैं पहाड़ा
आ गया जाड़ा!
टोप कानों पर चढ़ा
सीने कसा स्वेटर,
अंग सारे ढके फिर भी
कांपते थर-थर।
ताल में आया सिंघाड़ा
भा गया जाड़ा!
दांत उग आए-
लगा अब काटने पानी,
अब नहाने से बहुत
डरने लगी नानी।
पीटता आया नगाड़ा-
छा गया जाड़ा!

■ शिवचरण चौहान

आओ बच्चो

आओ बच्चो रेल बनाएं ।
आगे-पीछे हम जुड़ जाएं ।।
ईशु तम इंजन बन जाओ ।
लाली तुम पीछे चली जाओ ।।
गार्ड बन तुम काम करोगी ।
संकट में गाड़ी रोकोगी ।।
हम डिब्बे बन जाएंगे ।
छुक-छुक रेल चलाएंगे ।।

■ दीनदयाल शर्मा

• चुटकुले...



टीचर : बताओ, सबसे पुराना जानवर कौन-सा है?
स्टूडेंट : जेबरा!
टीचर- वो कैसे?
स्टूडेंट : क्योंकि वो आज भी 'ब्लैक एंड व्हाइट' है!

मरीज : डॉक्टर साहब, मुझे भूलने की बीमारी हो गई है।
डॉक्टर : कब से है ये बीमारी?
मरीज : कौन-सी बीमारी?

संता : यार बंता, मैं जब भी आईने के सामने खड़ा होता हूं, मुझे सिरदर्द होने लगता है।
बंता : अरे बेवकूफ, अपनी शक्ल देखकर तो किसी को भी हो जाए!

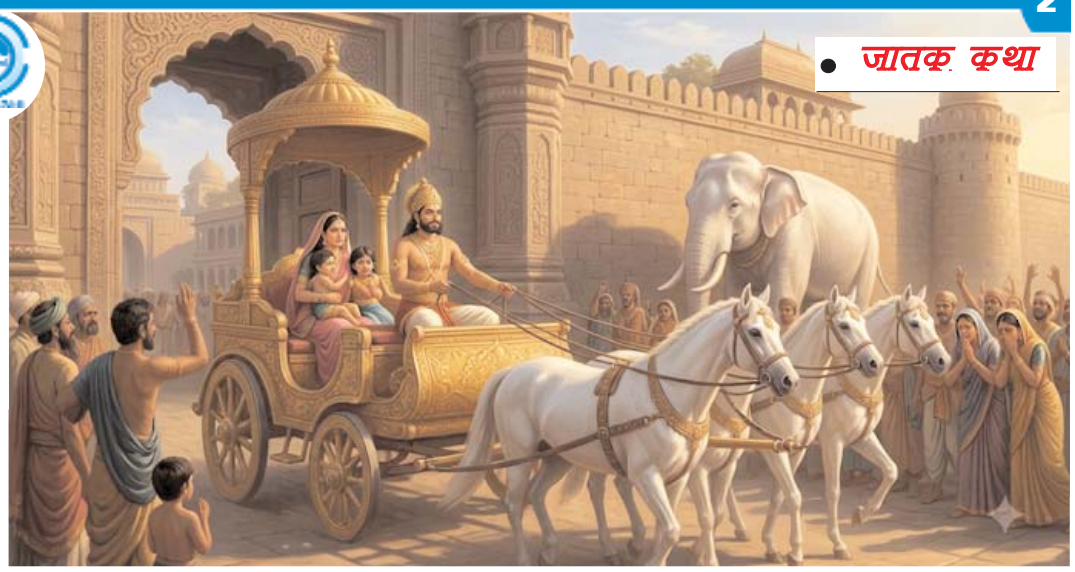
बच्चा : मम्मी, क्या कल स्कूल बंद है?
मम्मी : क्यों?
बच्चा : कल टीचर ने कहा था कि 'कल तुम सबका दिमाग खाऊंगा' और मेरा तो आज ही खत्म हो गया!



• जानकारी...

दुनिया की सबसे बड़ी गोल्ड माइन

दुनिया की सबसे बड़ी सोने की खदान का आकार इस बात पर निर्भर करता है कि उसका आकार कैसे मापा जा रहा है। संयुक्त राज्य अमेरिका में नेवादा गोल्ड माइंस सालाना सोने के उत्पादन के मामले में खनन परिसर में सबसे आगे है. इसी के साथ उज्बेकिस्तान का मुरुंताऊ अपने बड़े खुले गड्ढे और सोने के भंडार के लिए मशहूर है। 2025 में दोनों खदानों से 80.7 टन और 53.1 टन सोने का उत्पादन हुआ। नेवादा गोल्ड माइंस अमेरिकी राज्य नेवादा में बसी है। यह एक अकेली खदान नहीं है बल्कि खदानों और प्रोसेसिंग फैसिलिटी का एक परिसर है। ज्वाइंट वेंचर की स्थापना 1 जुलाई 2019 को बैरिक गोल्ड और न्यूमोंट कॉरपोरेशन द्वारा की गई थी. बैरिक के पास 61.5त्न हिस्सेदारी है और न्यूमोंट के पास 38.5% हिस्सेदारी है। कंपनी के मुताबिक इस परिसर में 10 भूमिगत खदानें और 12 खुले गड्ढे वाली खदानें शामिल हैं। इसके प्रमुख परिचालन में कार्लिन, टर्क्वॉइज रिज, फीनिक्स और लॉन्ग कैन्यन शामिल हैं। गोल्ड माइन रैंकिंग के मुताबिक परिसर ने 2025 में लगभग 2.595 मिलियन औंस सोने का उत्पादन किया। यह लगभग 80.7 मीट्रिक टन के बराबर है। उत्पादन 2024 की तुलना में लगभग 3% कम था। स्वामित्व के आधार पर बैरिक की हिस्सेदारी लगभग 1.591 मिलियन औंस थी। इसी के साथ न्यूमोंट की हिस्सेदारी लगभग 999,000 औंस थी। मुरुंताऊ उज्बेकिस्तान के किजिलकुम रेगिस्तान में बसी है। इसका संचालन राज्य के स्वामित्व वाली कंपनी नवोई मीनिंग एंड मेटलर्जिकल कंपनी द्वारा किया जाता है। यह दुनिया की सबसे बड़ी खुली खदान वाली सोने की खदानों में शामिल है। नवोई मीनिंग एंड मेटलर्जिकल कंपनी के मुताबिक यह गड्ढा करीब 5.5 किलोमीटर लंबा, 3.4 किलोमीटर चौड़ा और 675 मीटर से ज्यादा गहरा है। कंपनी की योजना भविष्य के खनन चरण में इसकी गहराई 1000 मीटर से ज्यादा बढ़ाने की है। 2025 ग्लोबल गोल्ड माइन रैंकिंग ने यहां का उत्पादन लगभग 1.708 मिलियन औंस या 53.1 मीट्रिक टन रखा था। यह इसके 2024 आउटपुट से लगभग 4% ज्यादा था। यह आंकड़ा अकेले मुरुंताऊ खनन परिसर के बारे में था। नवोई मीनिंग एंड मेटलर्जिकल कंपनी की सभी खदानों में 2025 में कुल सोने का उत्पादन 3.15 मिलियन औंस तक पहुंच चुका था जो पिछले साल से 1.9% ज्यादा रहा। नवोई मीनिंग एंड मेटलर्जिकल कंपनी ने 2025 में 10.827 बिलियन डॉलर का रेवेन्यू दर्ज किया। यह 2024 में 7.395 बिलियन डॉलर से 46.4% की बढ़ोतरी है. सोने की ऊंची कीमत और बढ़ी हुई बिक्री मात्रा ने बढ़ोतरी में योगदान दिया है। कंपनी का ऐसा अनुमान है कि मुरुंताऊ का सोना भंडार 4500 टन से ज्यादा है। इसकी स्टेज 5 विस्तार परियोजना चल रही है। दूसरे चरण में एनएमएमसी ने मुरुंताऊ से हाइड्रोमेटालर्जिकल प्लाट नंबर 2 तक सालाना अयस्क आपूर्ति क्षमता को 60 मिलियन टन तक बढ़ाने की योजना बनाई है।



• जातक कथा

वेस्सन्तर का त्याग

गतांक से आगे...

अंतत: उनकी यात्रा की परिसमाप्ति बंकगिरी के वन पहुँच कर हुई जहाँ विश्वकर्मा ने उनके लिए एक कुटिया का निर्माण कर रखा था।

वेस्सन्तर का प्रताप इतना महान था कि कोई भी जंगली या हिंस्त्र जानवर उनकी कुटिया के आस-पास भटकता भी नहीं था। इस तरह वन में विहार करते, उनके चार महीने खुशी-खुशी निकल गये।

एक दिन जब मद्दी भोजन इकट्ठा करने वन में कहीं दूर चली गयी थी और कुटिया के बाहर बच्चे खेल रहे थे तभी जूजका नाम का एक दरिद्र और वृद्ध ब्राह्मण वेस्सन्तर की कुटिया के पास पहुँचा।

उस वृद्ध को जवान पत्नी का घर के काम-काज आदि कराने के लिए दासों की आवश्यकता थी। अत: उसने वृद्ध जूजका को वेस्सन्तर के बच्चों को दान में लाने के लिए भेजा था; क्योंकि वेस्सन्तर के त्याग की चर्चा सर्वव्याप्त थी। जूजका ने वेस्सन्तर से उसके दोनों बच्चों को दान में मांग लिया और लताओं से उन बच्चों के हाथ-पैर बाँध बड़ी बेदर्दी से मारता-पीटता और घसीटता अपने मार्ग पर बढ़ गया।

देर शाम को जब मद्दी लौटी तब बच्चों को कुटिया में न पाकर रोती-पिटती उसने वेस्सन्तर से उनका पता पूछा किन्तु उत्तर में वेस्सन्तर मौन ही रहा। हाँ, दूसरे दिन वेस्सन्तर ने जूजका ब्राह्मण द्वारा बच्चों के ले जाने की सूचना दी, क्योंकि उस समय तक मद्दी बच्चों के वियोग को सहन करने में सक्षम हो चुकी थी। मद्दी ने भी तब पति की दान-शीलता की प्रशंसा की।

वेस्सन्तर के इस महान त्याग से पृथ्वी प्रकंपित हो उठी और साथ ही सिनेरु पर्वत भी हिल उठा जिससे सक्क (शक्र या इंद्र) भी चौंक उठे; और एक संयासी का भेष बना वेस्सन्तर की दान-परायणता की परीक्षा लेने उनकी कुटिया पर आ धमके। वहाँ उन्होंने वेस्सन्तर से उनकी पत्नी को दान में मांगा। वेस्सन्तर ने मद्दी को भी दान में दे दिया। मद्दी के हृदय से भी आह या क्रोध का कोई शब्द नहीं फूटा।

सक्क के लिए भी वेस्सन्तर का त्याग पूज्य था। उन्होंने तत्काल ही अपना असली रूप धारण कर, उनकी पारिवारिक खुशी लौटाने का वर प्रदान किया और दान-परायण पति-पत्नी से विदा ले अंतर्धान हो गये। उस समय कलिंग को जाने वाला जूजका लहु-लुहान बच्चों को लेकर रास्ता भूल जेतुन्तर जा पहुँचा। जोतुन्तर के सिपाहियों ने जुजका को शंकित होकर देखा, क्योंकि वह किसी भी तरह से बच्चों का अभिभावक या सम्बन्धी प्रतीत नहीं होता था। अत: वे उसे बन्दी बनाकर राजा के पास ले गये। राजा संजय ने तत्काल अपने खून को पहचान लिया और अपने पौत्रों को मुँह मांगे दामों में खरीद लिया। जूजका की किस्मत में आकस्मिक धनागमन का भोग नहीं लिखा था, क्योंकि दूसरे दिन ही जरूरत से बहुत ज्यादा भोजन करने के कारण उसकी मृत्यु हो गयी।

उसी दिन वह सफेद हाथी भी कलिंग छोड़ वापिस जेतुन्तर आ पहुँचा। राजा अपने सिपाहियों को साथ वंकगिरी जा युवराज वेस्सन्तर और मद्दी को वापिस अपने राज्य ले आया।

-समाप्त

देर शाम को जब मद्दी लौटी तब बच्चों को कुटिया में न पाकर रोती-पिटती उसने वेस्सन्तर से उनका पता पूछा किन्तु उत्तर में वेस्सन्तर मौन ही रहा।

हाँ, दूसरे दिन वेस्सन्तर ने जूजका ब्राह्मण द्वारा बच्चों के ले जाने की सूचना दी, क्योंकि उस समय तक मद्दी बच्चों के वियोग को सहन करने में सक्षम हो चुकी थी। मद्दी ने भी तब पति की दान-शीलता की प्रशंसा की...



• रोचक...

उमंगोट नदी



धरती ने जब भी अपनी कलाकारी दिखाने की ठानी होगी तो भारत के उत्तर-पूर्व में कोहरे से घिरे पहाड़ों के बीच ऐसी नदी बनाई, जिसके सामने दुनिया के कांच भी फीके पड़ जाएं। यह मेघालय की हरी-भरी वादियों में बहती है, जिसे उमंगोट नदी के नाम से जानते हैं। स्थानीय लोग इस नदी को डौकी नदी भी कहते हैं। यह नदी इतनी साफ और पारदर्शी है कि जब इसकी सतह पर नावें तैरती हैं तो भ्रम होता है कि लोग कहीं हवा में तो सफर नहीं कर रहे हैं। इस नदी में पानी की गहराई में पत्थर और रंग-बिरंगी मछलियां साफ तौर पर नजर आती हैं। शिलांग से लगभग सौ किलोमीटर की दूरी पर भारत और बांग्लादेश की सीमा के करीब स्थित उमंगोट नदी आज वैश्विक पटल पर प्राकृतिक सुंदरता का सबसे बड़ा अजूबा बन चुकी है। इस नदी के पानी की क्रिस्टल-क्लियर खासियत के पीछे केवल भौगोलिक संयोग नहीं है, बल्कि वहां के स्थानीय आदिवासियों की पीढ़ियों पुरानी परंपराएं हैं।

• पेड़...



दुनिया के सबसे पुराने जिंदा पेड़ प्रकृति की हजारों सालों तक जिंदा रहने की क्षमता के काफी शानदार उदाहरण हैं। हालांकि सबसे पुराने पेड़ की पहचान वैज्ञानिकों द्वारा पेड़ की परिभाषा पर ही निर्भर करती है। मेथुसेला संयुक्त राज्य अमेरिका के कैलिफोर्निया के व्हाइट माउंटेंस में स्थित एक ग्रेट बेसिन ब्रिसलकोन पाइन है। यह लगभग 2833 ईसा पूर्व अंकुरित हुआ था. पर्यटकों और तोड़फोड़ से बचाने के लिए इसका सटीक स्थान गुप्त रखा गया है। ये पेड़ काफी ज्यादा ठंडे और शुष्क परिस्थितियों में जिंदा रहते हैं।